MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

6th ANNIVERSARY

Peer Reviewed Multilingual Refereed Journal

विद्यावार्ता®

April To June 2025
Issue 55, Vol-04

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

www.vidyawarta.com

13) हिंदी का दलित नाटक : एक अध्ययन
डॉ. आनंद गुलाबराव खरात ||57

14) हिंदी के दलित उपन्यासों में चित्रित वंचित एवं शोषितों का चित्रण
डॉ. गोरखनाथ किर्दत ||61

15) दलित एकता का दर्शन—'नीला आकाश'
डॉ. बी. एस. बळवंत ||64

16) हिंदी आत्मकथा में चित्रित वंचित एवं शोषित नारी का जीवन
प्र. प्राचार्य, डॉ. आर. पी. भोसले ||66

17) श्याम बेनेगल का 'मंडी':एक अध्ययन
डॉ. रूपा चारी ||70

18) अल्मा कबूतरी : आदिवासी नारी का यथार्थ
डॉ. सुवर्णा नरसू कांबळे ||74

19) नीरजा माधव के चुनिंदा कहानियों में वंचित एवं शोषित नारी
प्रा. सोमनाथ तातोबा कोळी ||76

20) 'अपने अपने पिंजरे' आत्मकथा में चित्रित दलित जीवन
डॉ. तांबोळी एस.बी. ||80

21) हिंदी सिनेमा में किसान जीवन की यथार्थ झाँकी
डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर ||84

22) हिंदी दलित आत्मकथाओं में चित्रित वंचित एवं शोषितो का जीवन समस्याएँ एवं समाधान
डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे ||89

23) पुरुषप्रधान व्यवस्था को बेनकाब करती फिल्म:'लापता लेडीज'
डॉ. वृषाली विकास मिणचेकर ||93

24) हिंदी उपन्यास साहित्य मे चित्रीत समस्याए एवं समाधान
प्रा. डॉ. वंदना मोहिते. (हिंदी) ||97

25) असूरन:दलित त्रासदी का दस्तावेज
डॉ. युवराज रामचंद्र माने ||100

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

25

असूरन:
दलित त्रासदी का दस्तावेज

डॉ. युवराज रामचंद्र माने
हिंदी विभाग,
श्री.रावसाहेब रामराव पाटील महाविद्यालय,सावलज.

प्रस्तावना –

समाज, साहित्य और सिनेमा का अटूट रिश्ता है। सिनेमा और समाज का गहरा संबंध है। सिनेमा करोड़ों लोगों तक आसानी से पहुँचनेवाला एक सशक्त इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। सिनेमा में समाज में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियों, परंपराओं, अंधविश्वासों से ग्रस्त समाज का चित्रण के साथ–साथ समस्याओं का चित्रण करता है। मनोरंजन के साथ उपदेश, प्रबोधन, जन–जागरण आदि सिनमा का प्रमुख उद्देश्य रहा है। सिनेमा निर्देशक समाज में घटित सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शिक्षा की स्थिति के साथ नारी जीवन, दांपत्य जीवन, किसानों, मजदूर, दलित, खेल, पर्यावरण, मनोरंजन आदि विषयों पर फिल्म का निर्माण करता है।

भारत में सिनेमा की शुरुवात हिंदुस्तान सिनेमा द्वारा 'राजा हरिशचंद्र' मूकपट से सन ३ मई १९१३ ई. में दादासाहेब फाळकेजी ने की। भारत में हर साल सेकडों फिल्में बनती है। सन १९६० ई. के बाद साहित्य में जो विविध विमर्श ने अपना स्थान निर्माण किया, उसमें 'दलित विमर्श' महत्त्वपूर्ण विमर्श है। कई फिल्में साहित्यिक कृतियों पर बनी हुई है। तमिल फिल्म 'असूरन' जो ४ अक्तूबर २०१९ ई. में प्रदर्शित हुई है। वह भी साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पुमणी जी के 'वेक्काई' इस उपन्यास पर बनी है। यह फिल्म पंचमी के जमिन के अधिकार 'डिप्रेस्ड क्लास कंडिशनल' पर आधारित है। ब्रिटिशोंने अनुसूचित जाती को दि गयी जमीन सवर्ण लोगों को हस्तांतरित नही की जा सकती। मद्रास प्रेसीडेंसी के अंतर्गत १८९१ में लगभग १२ लाख एकड़ जमीन ऐसी दी गई थी। यह फिल्म दलित संघर्ष पर आधारित है। इसमें नायक का अपना दृष्टिकोण दिखाया गया है।

असूरन : दलित त्रासदी का दस्तावेज–

'असूरन' गोल्डमायीन टेलीफिल्म प्रा.लि. द्वारा, ४ अन्तूबर २०१९ ई. में प्रदर्शित की है। मनिष शहा प्रोड्यूसर और डायरेक्टर वेत्रिमारान है। फिल्म के लेखक गौतम सिद्धार्थ है। इसमें धनुष (शिवमणि), मनजु वारियर (पार्वती), प्रकाशराज (शेपाद्री वकील) की प्रमुख भूमिकाएँ हैं। यह फिल्म दो कथाओं में विभाजीत है पहले भाग में– एक दलित परिवार अपनी जमीन बचाने के लिए संघर्ष करता है द्य दूसरे भाग में जो फ्लॅशबॅक शैली में है। पंचमी की जमीन वापस पाने के लिए न्यायालयीन लढाई लडने की तैयारी और उससे होने वाले हिंसाचार की है।

'असूरन' तमील फिल्म है। इस फिल्म में तमिलनाडू गाँव–कसबे में बसे दलित लोगो के संघर्ष को दर्शाया है। सवर्ण द्वारा दलितों की जमीनों पर कब्जा करना, उन्हें अपने मूलभूत अधिकारों से दूर रखना, उन पर हुए अन्य अत्याचार का वास्तविक चित्रण किया गया है। ''भारत समाज में सदियों से उपेक्षित, अपमानित, तिरस्कृत दलित समाज स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए उत्सुक है। सदियों से तिरस्कार की पीड़ा भोग रहा दलित समाज अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए माध्यम की तलाश कर रहा है। दलितों को अपनी अस्मिता निर्माण के लिए निरंतर गतिशील, संघर्षशील और सर्जनशील रहना होगा। सिनेमा को मनोरंजन और लाभ के साथ नैतिक जिम्मेदारी का पालन भी किया जाना चाहिए।''१

'असूरन' अत्याचार के विरुद्ध अपने सन्मान का रक्षण करनेवाले दलित परिवार की कथा है। फिल्म की कथा की शुरुआत जमीदार नरसिंह के मर्डर से होती है। जमींदार का बेटा राजेश केस करने से मना कर देता है। मर्डर के कारण शिवमणि और छोटे बेटे चिंतामणि जंगल में छुपे रहते हैं, तू पार्वती और बेटी लक्ष्मी दूसरे गांव चाचा के यहां जाती है। पुणे मुन्नू मामा मदद करता है। गाँव दो हिस्सों में बटा है। एक हिस्से में किसान और दूसरे में जमींदार। जमींदार

नरसिंह गरीबों की जमीन हथियाना चाहता है। वह और उसका छोटा भाई वेंकटेश मद्रास की एक कंपनी से मिलकर गांव की गरीब किसानों की जमीन पर सीमेंट की फैक्ट्री लगाना चाहते हैं। गांव में जमींदार की १६०० एकड़ जमीन है, फिर भी शिवमणि के तीन एकड़ पर उसकी नजर है। नरसिंह के गांव में सिनेमाघर,कोयले की फैक्ट्री, खाद की दुकान, कपड़े की दुकान होने के बावजूद भी पैसों की हवास में गरीबों की जमीन पर उसकी बुरी नजर है। गुरुमणि शिवमणि का बड़ा बेटा है, वह शिवमणि की जमीन बेचने की खिलाफ है। जमीन से ही समाज में इज्जत मिलती है ऐसा उसका मानना है। नरसिंह के आदमी शिवमणि और उसके बीच के जमीन पर बिजली का बाढ़ बनाते हैं। बावड़ी से मोटर लगाकर पानी निकालते हैं। इसका विरोध पार्वती और चिंतामणि करते हैं। गुरुमणि और नरसिंह के आदमियों में झगड़ा होता है। मामला पंचायत में जाता है। बेटे के सामने कोई माँ को मारता है, तो बेटा उसे मारेगा ही । यह पंचों का फैसला नरसिंह मानते हुए बदले में वह शिवमणि को अपने बेटे के पैर छूने को कहता है। शिवमणि तैयार हो जाता है। नरसिंह का इससे उसका समाधान नहीं होता वह सारे गाँव के पैर छूने को कहता है। अपने बेटे को बचाने के लिए शिवमणि ऐसा करता भी है। पार्वती इसका विरोध करती है। वह कहती है— ''उन लोगों ने तुमसे कहा और तुम उनके पैरों में गिर गए आखिर ऐसा कैसे क्यों किया? क्या मिला तुम्हें? इतने सालों से तुमने और मेरे भाई ने जो इज्जत कमाई थी वह सब तुमने मिट्टी में मिला दी।''२ शिवमणि को अपनी इज्जत से ज्यादा अपने परिवार की चिंता थी। वह कहता है— ''गुरु को कुछ हो जाता तो तुम इज्जत का क्या करती मुझे उसे बचाना था''३ इसके बाद पुलिस गुरुमणि को छोड़ देती है। जब चिंतामणि गुरुमणि को बताता है कि जमीदार ने शिवमणि को सारे गांव के पैर पर पढ़ने को कहा और पिताजी ने वैसा किया भी, यह बात सुनकर गुरुमणि क्रोधित होता है और नरसिंह को चप्पल से मारता है। इस अपमान का बदला लेने के लिए जमींदार के आदमी चिंतामणि के सामने गुरुमणि को फाँसी लगाकर भाले से नोच—नोच कर मार देते हैं। गुरुमणि चिंतामणि को भागने को कहता है। चिंतामणि भाग कर शिवमणि और मन्नू मामा को बुलाकर लाता है, पर वह कोई दिखाई नहीं देता। मामा और शिवमणि को यह उसका मजाक है ऐसा लगता है, पर पेड़ के तने पर फाँसी लगाने के निशान मिलते हैं। शिवमणि, मामा, चिंतामणि सभी पुलिस के पास जाते हैं, लेकिन पुलिस शिकायत नहीं लेते। सभी को डरा धमका कर घर जाने को कहते हैं। अंत में शिवमणि की शिकायत लेते हैं,लेकिन कोई कार्रवाई नहीं करते। अगले दिन गुरुमणि की सर कटी नंगी लाश जो पास की विटट भट्टी में भुनी हुई थी, खेतों में मिलती है। लाश को देखकर शिवमणि और पार्वती का आक्रोश दिल दहला देता है। पुलिस कानूनी दावपेचों में फँसाकर और जमींदार के दबाव में आकर गुरुमणि की सर कटी लाश भी अंतिम संस्कार के लिए नहीं देते। शिवमणि का हँसता—खेलता परिवार कुछ पलों में बिखर जाता है। शिवमणि शराब के नशे में धूत रहता है। पार्वती को अभी तक विश्वास नहीं की गुरुमणि मर चुका है। वह उसे ढूंढने दर—दर भटकती रहती है। मन्नू मामा गुरुमणि का श्राद्ध मनाना चाहता है,पर पार्वती उसे ऐसा करने से रुकती है और कहती है— ''यह जिसका किया धरा है,वह तो खुशियाँ मना रहा है। पहले उन्हें नरसिंह का श्राद्ध मनाने देना तब यह सब करना मैं यह नहीं होने दूंगी।''४ पार्वती की है अवस्था देखकर मन्नू मामा नरसिंह को मारने की बात करता है, पर शिवमणि उसे समझाता है कि — ''अगर उसे मार दिया तो मेरे बच्चों बीबी का क्या होगा कुछ समय के बाद सब ठीक हो जाएगा।''५ क्रोध में आकर अगर कोई गलत कदम उठाया तो उसका भुगतान खुद के साथ—साथ परिवार वालों को भी करना पड़ता है। यह बात शिवमणि मन्नू को समझाता है। १ सालबाद पार्वती अंत में मानती है, कि गुरुमणि उसे हमेशा के लिए दूर चला गया है। उसकी श्रद्धा करना चाहती है। चिंतामणि माँ की इस अवस्था से परेशान हो जाता है। मन ही मन जमीदार को करने का फैसला करके माँ से अपने दोस्त वीनू के घर जाता हो का कर घर से रात में बाहर निकल जाता है। वह हर समय अपने साथ अपने कुत्ते को लेकर चला जाता

है, पर आज झोला उठाकर अकेला ही निकल जाता है। जिससे पार्वती चिंतित होती है और शिवमणि को उठती है। वह रात में नरसिंह का पीछा करता है। रात के अंधेरे में चिंतामणि नरसिंह को मार देता है और अपने भाई पर हुए अन्याय का बदला लेता है। ऐसा करने से उसके सारे परिवार को गाँव छोड़कर भागना पड़ता है। जमींदार का बेटा, उसके आदमी और पुलिस सारे जंगल में शिवमणि और चिंतामणि को ढूँढते रहते हैं। उन्हें ढूँढने के लिए चिंतामणि का कुत्ता लाया जाता है। कुत्ता चिंतामणि को ढूँढ निकलता है। चिंतामणि को देखते ही जमींदार के लोग उसे करने के लिए आगे बढ़ते हैं। अब तक चिंतामणि को लगता था उसका पिता एक डरपोक इंसान है, लेकिन शिवमणि को पता है,उसके गुस्से पर काबू ना रख पाने से जीवन की क्या दशा होती है? यह उसने देखा है। शिवमणि आवेश में आने की बजाय ठंडे दिमाग से कम लेता है और अपना पिता होने का धर्म निभाते हैं। जितना हो सके उतना शांति से हो जाए यही उसकी अपेक्षा है। अब तक शांत रहने वाला शिवमणि जब अपने बेटे चिंतामणि के जान पर बन जाती है तो अपना रौद्र रूप दिखाता है। जंगल में उन्हें मारने आए आदमियों पर वह टूट पड़ता है। शिवमणि का यह रूप देख चिंतामणि स्तब्ध रह जाता है। चिंतामणि जब बताता है कि इसी ने भैया को मारा था। तब हाथ में हथियार होने के बावजूद भी शिवमणि बेटे के हत्यारे को छोड़ देता है। वह कहता है– ''मैं तुझे मार कर अपने परिवार को मुसीबत में नहीं डाल सकता अगर दोबारा मेरे परिवार की तरफ नजर उठे तो मैं सबको काट डालूंगा।''६

शिवमणि चिंतामणि को अपने जवानी की कहानी सुनाता है। पहले मै किसन नहीं था। शराब बनाता था। उसका मालिक विश्वनाथ जमींदार था। उसका बड़ा भाई शंभू जो एक क्रांतिकारी है और जमीदारों के खिलाफ आंदोलन करता है। जमींदारों ने जबरदस्ती से गाँव वालों की जमीन हड़प ली थी। वह अपनी बहन की शादी एक क्रांतिकारी से करना चाहता है। एडवोकेट शेषाद्री और शंभू मिलकर जमींदारों के खिलाफ कलेक्टर के यहां कानूनी लड़ाई छेड़ देते हैं। शंभू और उसके साथियों के बाप दादाओं की जमीन जमींदारों के बाप दादाओं ने धोखे से हड़पी थी। पैसों की मदद के नाम पर जमीन हड़पना यह जमींदारों की पुरानी रीति है। मुनिया शिवमणि की मंगेतर है मुनिया को कांटा चुभता है तो शिवमणि मुनिया के लिए चप्पल बनाते हैं, लेकिन उसने चप्पल पहनना गाँव की जमींदारों के लोग, पांडी को अच्छा नहीं लगता। पांडी मुनिया को चप्पल उतरने को कहता है। वह कहता है– ''क्यों रे तू गांव में चप्पल पहन के फुदकती रहेगी और मैं चुपचाप तमाशा देखूंगा।''७ मुनिया मना करती है लेकिन अपनी जबरदस्ती चप्पल उतार कर मुनिया के सर पर रखकर डंडे से मरते–मरते पूरे गांव में घूमता है। उसे लातों से पीटता है। मुनिया शिवमणि से कहती है–''दिल कर रहा है मैं जान दे दूं अपनी इतनी बुरी तरह से कोई जानवर को भी नहीं मारता है पूरा गांव तमाशा देख रहा था किसी ने भी उसे रोकने की कोशिश नहीं की।''८ ऐसी स्थिति आज भी भारत के विविध राज्यों में दिखाई देती है। २१वीं सदी के अंतर्गत ऐसा बर्ताव आज भी किया जा रहा है। जून २०१३ में उसीलमपट्टी तहसील, वडूगापट्टी में दलित लड़की ने चप्पल पहन कर स्कूल गए, तो उसे मारा गया था। मई २०११ में मुद्राई के वेल्लोर के दलित युवक थंगा पांडियन ने बाइक लेने पर उसके घर पर हल्ला किया था। इतिहास में ऐसी अन्य घटनाएँ देखने को मिलती है। लगभग १२०० गाँव में अलिखित नियम था कि दलित उच्च जाति के क्षेत्र से जाते समय चप्पल ना पहने। मुनिया के अपमान का बदला शिवमणि पांडी को भरे बाजार में पीट कर, उन्हें एक पेड़ से बांधकर रखता है। वह पांडी को मुनिया से माफी माँगने को कहता है, पर जमिदार विश्वनाथ आ कर उसे छुड़ाकर ले जाता है।

दलित हो के जमींदारों की बराबरी की तो, वह उन्हें उनकी बेइज्जती लगती है। शिवमणि भी शंभू के साथ मिलकर जमींदारों के खिलाफ आंदोलन करता है। इससे गुस्सा होकर जमींदार विश्वनाथ शिवमणि की बस्ती में आग लगा देता है और शंभू के साथ उसके परिवार को भी मार देता है। मुनिया शिवमणि को बताती है की पांडी ने बस्ती में आग लगाई है। गुस्से में आकर शिवमणि जमींदार विश्वनाथ के घर में

घुसकर पांडी और विश्वनाथ को मार देता है। अपने परिवार को जलाने वाले को वह छोड़ता नहीं। इस कारण शिवामणि को अपने गाँव छोड़ना पड़ता है। वह दूसरे गाँव में जाकर रहता है। वही पार्वती मिल जाती है। वह पार्वती से शादी करता है। यह कहानी सुनाने के बाद चिंतामणि को अपना पिता किसी हीरो से काम नहीं लगता। शिवमणि वकील से मिलकर चिंतामणि को छुड़ाने की तैयारी करता है। वकील दोनों को कोर्ट में सरेंडर करने का कहता है। अदालत में जमींदार के भाई के गुंडे होने के कारण शिवमणि और बेटा अंदर जा नहीं सकते थे। उतने में मजिस्टर निकल जाते हैं। शिवमणि वकील के माध्यम से अपने बच्चे चिंतामणि को बचाने के लिए अपनी जमीन जमीदार को देने का प्रस्ताव रखता है। पंचायत में शिवमणि छोटे बेटे को बचाने के लिए अपनी जमीन जमींदार को दे देता है और नरसिंह के खून का इल्जाम अपने कर लेता है, लेकिन जमींदार अपनी आदमियों के साथ मिलकर चिंतामणि को पकड़ता है और जहाँ नरसिंह को मारा था उसी जगह लेकर उसे मारने लगता है। पंचों का निर्णय वेंकटेश नहीं मानता। यह बात दगडू शिवमणि को बताता है। शिवमणि उनके साथ लड़ता है। तभी मन्नू मामा अपनी अपनी जाँत वालों को इकट्ठा करता है। जब बात छोटे बेटे की जान पर आती है तो शिवमणि राक्षस का रूप धारण करता है। वह कहता है — ''मुझे फिर से रक्षस बनने पर मजबूर किया।''[९] इस लड़ाई में नरसिंह का बेटा राजेश मारा जाता है। अब यह लड़ाई केवल दो परिवार की ना रह कर दो जातियों की हो जा रही थी। ''उस दिन गाव के लोगो ने फैसला किया की वो अमीरी और गरीबी के सीमा को मिटा देंगे और खून खराब नही होने देंगे। एक साथ मिलकर प्यार से रहेंगे।''[१०] शिवमणि चिंतामणि को समझता है। खून खराबे में कुछ नहीं रखा है। अपनी बहन और माँ का ख्याल रखना। वह कहता है— ''तेरे भाई को ढूँढने में पुलिस ने हमारी कोई मदद नहीं की, यह पुलिस की गलती है। तेरी भाई के मौत के सदमे से हम तेरी ठीक से परवरिश नहीं कर पाए, यह हमारी गलती है। जब तेरे साथ अन्याय हुआ तो तुमने वही किया जो तुझे ठीक लगा, लेकिन उनसे बदला लेना क्या यही तरीका नहीं था। अगर जमीन होगी कोई भी छीन लेगा, पैसे होंगे कोई भी लूट लेगा, पढ़ा—लिखा होगा तो तुझे कोई कुछ नहीं छीन सकता, अगर तुझे अन्य से जीतना है, तो पढ़—लिखकर एक ताकतवर इंसान बन लेकिन अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल मत करना जैसे आजकल लोग कर रहे हैं नफरत हमें तोड़ती है और प्यार जोड़ता है। हम एक ही मिट्टी के बने हैं, लेकिन जातिवाद ने अलग कर दिया है। हम सबको इस सोच से उभरना होगा।''[११] शिवमणि की सोच हमें यह सीख देते हैं कि मानव को मनुष्यता का पालन करना चाहिए। मनुष्य का मनुष्य के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार होना चाहिए। जाति धर्म में बाटे लोग कभी मानव जाति की उन्नति नहीं कर सकते।

निष्कर्ष —

यह फिल्म प्रतिशोध का प्रसार एवं प्रचार नहीं करती, तो अपने हक्क, स्वाभिमान अपने समाज के सन्मान के लिए लढता हुआ नायक दिखता है। वह बहुत सुंदर बात बतात है की हमारे पास अगर शिक्षा है, तो हमसे कोई भी हमारा शोषण नहीं कर सकता। इसलिए हमें पढ़—लिखकर सत्ता में आना होगा। जात—पात इन्सान को इन्सान नहीं रहने देती। मनुष्य के मूलभूत अधिकारों से वंचित रखना, उसका शोषण करना तथा अपने बल, अधिकारों का गलत उपयोग करनेसे समाज में अराजकता फैल जाएगी। प्रस्तुत फिल्म के माध्यम से यही बाते समाज के सामने रखी है। एक दूसरे के साथ मिल—जुल कर रहना और जीवन का आनंद उठाना यही ईस फिल्म का उदेश्य है। यह फिल्म दलितों के भूत और वर्तमान काल के अनेक प्रश्नों को उजागर कर देती है।

संदर्भ—

१. डॉ. कांबळे अनिल 'सिनेमा और दलित' प्रज्ञा प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण २०१७ ई.पृ.क्र. १५.

२. 'असूरन' फिल्म,२०१९ ई. https://youtu.be/9eurKR4gY90?si=rQmQHHzV_mwBV2gY

३. वही ४. वही ५. वही ६. वही ७. वही ८. वही ९.वही १०. वही ११. वही

⌘⌘⌘